एनसीएल में दीमक एवं मच्छर प्रबंधन पर कार्यशाला

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में दि. 12-14 अगस्त, 2005 को पेस्ट कन्ट्रोल एसोशिएशन ऑफ इंडिया (पीसीएआई), चेन्नई एवं एनसीएल द्वारा संयुक्त रूप से तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया । इस कार्यशाला में उक्त संघ से जुड़े लगभग 40 कीट नियंत्रक उद्यमियों को मच्छर एवं दीमक प्रबंधन के विभिन्न पहलुओं पर सैद्धांतिक एवं प्रत्यक्ष प्रशिक्षण दिया गया । इस कार्यशाला में विविध अनुसंधान संगठनों तथा कीटनाशी उद्योग के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने संबंधित विषयों पर व्याख्यान दिए । एनसीएल के कीटविज्ञान प्रभाग के वैज्ञानिकों ने प्रतिभागियों को दीमक एवं मच्छरों की विभिन्न प्रजातियों को पहचानने, कीटों के जीवन के विभिन्न चरणों तथा कीटनाशकों का विवेकपूर्ण एवं समय पर प्रयोग और उनके सुरक्षा एवं पर्यावरणीय पहलुओं के संबंध में जानकारी दी ।

डॉ. बी.डी. कुलकर्णी, उपनिदेशक, एनसीएल ने कार्यशाला के प्रतिभागियों एवं आमंत्रित अतिथियों का एनसीएल की ओर से स्वागत किया । उन्होंने कीटों के खतरे को योजनाबद्ध तरीके से कम करने तथा नियंत्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया । श्री दीपक गुप्ते, कार्यपालक उपाध्यक्ष, पीसीएआई, ने संघ की तरफ से सभी का स्वागत किया । उन्होंने कहा कि इस संघ का उद्देश्य कीटों पर नियंत्रण करना है न कि उन्हें समूल रूप से नष्ट करना । श्री ए.बी.नेने, अध्यक्ष, पीसीएआई ने कीट नियंत्रण प्रचालकों (पीसीओ) के बारे में बताते हुए कहा कि पीसीएआई कीट नियंत्रक उद्यमियों के लाभार्थ प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कार्यशालाएँ आयोजित करता रहा है । लेकिन वैध लाइसेंस धारक उद्यमियों के आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं । उन्होंने सरकारी प्राधिकारियों से अनुरोध किया कि वे कीट नियंत्रक प्रचालकों को सरकारी सूची में शामिल करें । कीट नियंत्रण की स्थिति में सुधार लाने के लिए उन्होंने सभी कीट नियंत्रण प्रचालकों हेतु प्रशिक्षण अनिवार्य करने का आग्रह किया ।

डॉ. पी.एस.चान्दुरकर, पादप सुरक्षा सलाहकार, भारत सरकार ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए कहा कि केवल एक प्रतिशत कीटों को छोड़कर अधिकांश कीट प्रजातियां मानव जाति के लिए लाभदायक हैं । इस एक प्रतिशत कीटों में से मच्छर एवं दीमक क्रमशः मानव के स्वास्थ्य एवं अवसंरचना के लिए बहुत ही हानिकारक हैं । उन्होंने आगे कहा कि हमारे पास कीटनाशकों के रूप में बहुत ही कम अणु हैं और हमें विवेक के साथ उनका प्रयोग करना चाहिए अन्यथा कीट भी अणुओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर सकते हैं जैसा कि कृषि कीटनाशकों के मामले में हुआ था ।

डॉ. चान्दुरकर ने उद्योग जगत का आह्वान किया कि वह कीट नियंत्रण के मूल्याँकन की गुणवत्ता के मानकों, लाइसेंस देने और प्रशिक्षण की व्याख्या करने हेतु आगे आए । इस व्यवसाय के भविष्य को उज्ज्वल बताते हुए उन्होंने कहा कि लोग अब कीटों एवं कीटनाशकों से संबंधित अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरूक हो रहे हैं । अतः हमें भी इस क्षेत्र में बने रहने हेतु गुणवत्ता से परिपूर्ण सेवा प्रदान करनी चाहिए ।

डॉ. वाई. एल.नेने, अध्यक्ष, एशियन एग्री-हिस्ट्री फाउंडेशन, सिकंदराबाद एवं पूर्व उप महानिदेशक, अंतर्राष्ट्रीय अर्धशुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान को आजीवन उपलब्धि पुरस्कार देकर उनका अभिनंदन किया गया । अपने मूल अभिभाषण में उन्होंने ऐसे कुछ औषधीय पौधों का उल्लेख किया जिनमें कीटनाशी सक्रियता है तथा यह सुझाव दिया कि आधुनिक प्रौद्योगिकी द्वारा उनकी संभावनाओं को तलाश कर भविष्य के कीटनाशकों के रूप में उनका लाभ उठाएँ । इस कार्यशाला के उद्‌घाटन कार्यक्रम में कीट नियंत्रण एवं कृषि क्षेत्र के सुप्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया । इस अवसर पर पेस्ट कन्ट्रोल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया के कार्यकलापों के बारे में एक वीडियो फिल्म का भी प्रदर्शन किया गया । डॉ. एस.एन. मुखर्जी, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कीटविज्ञान प्रभाग, एनसीएल ने प्रयोगशाला की ओर से आभार प्रदर्शन किया जबकि सुश्री विजया अद्यन्ताया, सदस्य, पीसीएआई ने उक्त संघ की ओर से आभार व्यक्त किया ।

दि. 13 अगस्त, 2005 को पूर्वाह्न में आयोजित तकनीकी सत्र में नासिक के निजी कीट नियंत्रक परामर्शदाता श्री एम. बी. मोरे ने व्याख्यान दिया जिसमें उन्होंने दीमकों की विभिन्न प्रजातियों, उनकी पहचान और उनके नियंत्रण हेतु किए जाने वाले उपायों पर प्रकाश डाला । एक अन्य व्याख्यान में डॉ. जी. जीवर्गिस, उपनिदेशक, राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे ने मच्छर की उन प्रजातियों की पारिस्थितिकी एवं जीवविज्ञान के बारे में बताया जो मलेरिया, फाइलेरिया और डेंगू के संवाहक हैं । कार्यशाला के अंतिम दिन के पूर्वाह्न सत्र में डॉ. ए.जी.चन्देले, प्रोफेसर एवं प्रमुख, कीटविज्ञान, पुणे कृषि महाविद्यालय ने दीमकों के नियंत्रण हेतु ललचाने वाले जालों के प्रयोग पर मनोरंजक व्याख्यान दिया । श्री केदार एस. भिडे, प्रबंधक, विपणन विकास (जनस्वास्थ्य व्यवसाय) , सूमीटोमो केमिकल इण्डिया प्रा.लि., मुम्बई ने मच्छरों के नियंत्रण की आधुनिक पद्धतियों पर व्याख्यान दिया । इस सत्र का तीसरा अतिरोचक एवं महत्त्वपूर्ण व्याख्यान डॉ. पी.सी. कनोजिया, सहायक निदेशक, राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पुणे ने दिया । अपने व्याख्यान में उन्होंने मच्छरों से होने वाले रोगों की निगरानी पर प्रकाश डाला । श्री ए. वी. नेने, अध्यक्ष, बीसीएआई ने अपने अंतिम व्याख्यान में दीमक तथा कीट नियंत्रण उद्योग से संबंधित कानूनी मामलों की जानकारी दी ।

दि. 13 एवं 14 अगस्त को कार्यशाला के दोनों अपराह्न सत्रों में एनसीएल के कीटविज्ञान प्रभाग के वैज्ञानिकों - डॉ. (श्रीमती) पी.वी. पवार, डॉ. एस.जी. देशपाण्डे एवं डॉ. एस.पी. भोण्डे ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया । कार्यशाला के समापन कार्यक्रम में डॉ. एस.एन. मुखर्जी ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूरा करने पर सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए ।